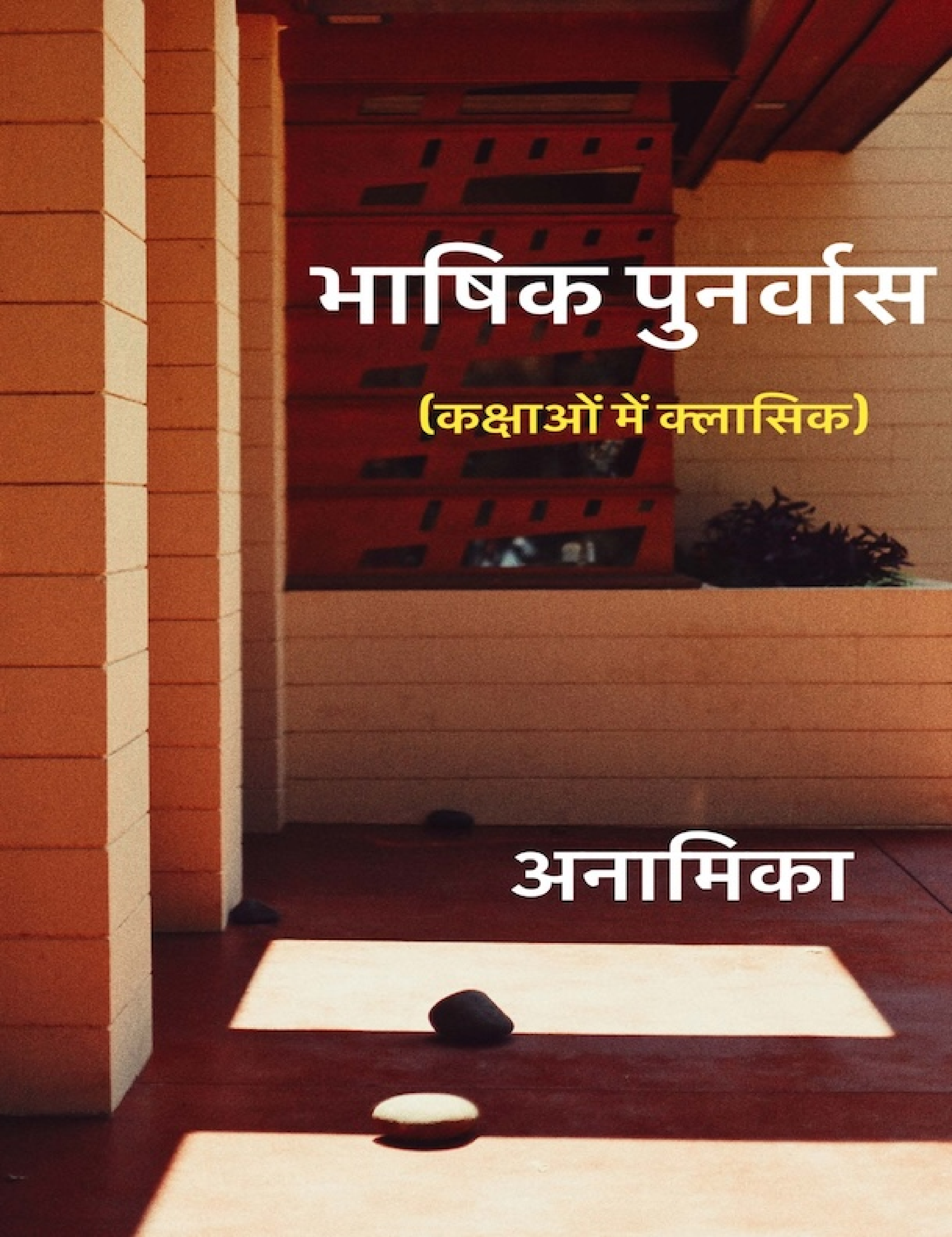

भाषिक पुनर्वास

(कक्षाओं में क्लासिक)

अनामिका

भाषिक पुनर्वास

(कक्षाओं में क्लासिक)

पढ़ना ही ज़िंदगी है

अनामिका

बहु-पुरस्कृत और बहुपठित कवि-उपन्यासकार अनामिका दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य पढ़ाती हैं। रिल्के, सिल्विया प्लांस, ऐन सेक्सटन और कई समकालीन स्त्री-कवियों के उनके अनुवाद चर्चित रहे हैं। जॉन डन नामक मेटाफिजिकल कवि के 'रेसेप्शन' पर उनका शोध-ग्रंथ भी प्रकाशित है। सम्प्रति वे यूजीसी फेलोशिप के अंतर्गत तीनमूर्ति फेलो हैं।

उन सब छात्रों, युवा पत्रकारों/

रचनाकारों और शोधार्थियों के नाम

जो पुरानी पीढ़ी से सम्वाद बनाए हुए हैं,

डोरिस लेसिंग की तरह...

दोनों तरफ दीप जलाते हुए!

विश्वयुद्ध के बाद जो तीन उपन्यासकार स्त्री-लेंस से पश्चिम को उकेरने में सफल हुई-उनमें एक हैं डोरिस लेसिंग। इनके ठीक पहले सिमॉन बोउआ का नाम आता है और तत्काल बाद नार्थली सरूत का।

डोरिस का बचपन पुराने रोडेशिया (जिम्मबाव्वे) के एक फॉर्महाउस में बीता। गोरी चमड़ी वाले सम्पन्न घर की यह संतान थोड़ी तो उद्धत भी थीं, लेकिन ईमानदार। एक जगह उन्होंने बचपन की एक घटना का उल्लेख जिस संताप के साथ किया है, वह भी इन्हें बड़े पाये का लेखक सिद्ध करता है। एक वृद्ध अफ्रीकी के साथ किसी मुद्दे पर इनका विवाद छिड़ा था। अपने तर्क जब पूरे आवेग के साथ ये सामने रखने लगीं, वृद्ध धीरे से मुस्कुराया और इतना ही बोलकर चुप हो गया- "मैं बहुत बूढ़ा हूँ, आप बहुत युवा हैं।

लेसिंग लिखती हैं कि इस एक वाक्य और उस पूरे तेवर का उनके मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे देर तक चुप रहीं और उन्होंने संकल्प किया कि जीवन में हमेशा बड़बोलेपन से बचेंगी और हर पक्ष का जो एक प्रबल प्रतिपक्ष होता है, उसे ध्यान से सुन-समझकर ही अपनी तरफ से कुछ कहेंगी।

वृद्ध व्यक्ति के उस सिद्ध वाक्य की ताकत दरअसल अंडरस्टेटमेंट (मंद्रध्वन्यार्थ) की ताकत है। अच्छा साहित्य इसी ताकत का इस्तेमाल कुछ इस तरह करता है कि पढ़ने-सुनने वाले की आत्मा तड़पकर रह जाए। आत्मा का ई-मेल खोलने वाला पासवर्ड इसे मान सकते हैं।...

अनुक्रम

आमुख	6
ब्याह लाना विश्व क्लासिक अपनी भाषा में	19
प्रकरण -1 अनुवाद की एशियाई परंपरा	48
प्रकरण-2 ब्रिटिश साहित्य का अनुवाद	65
खंड 2 व्यावहारिकी	82
शेक्सपियर से गपशप	83
एक थे शेक्सपियर	84
शेक्सपियर के वक्त थियेटर	94
शेक्सपियर की कविता और उनके रंग-बिरंगे चरित्र : एक कोलाज	96
शेक्सपियर उवाच	104
कम्पनी बाग में हैमलेट	017
वृद्ध क्लीनिक में किंग लियर	110
महत्त्वाकांक्षा : एक फूल का नाम लो	113
जूलियस सीजर का ऐंटनी : भिगाकर जूते मारने की कला	117
ऑथेलो : प्रेम में स्वतत्वबोध	120
द टेम्पेस्ट : कैलिबन की मुक्तिगाथा	126
मच अडू : अबाउट नथिंग : बेमतलब की चिल्ल-पों	133
मेजर फॉर मेजर : झाड़े सत्ता का टुइयाँ लिबास	134
ब्रिटिश कविता से गपशप	137

पुंश्चली पुराण और 'वाइफ ऑफ बाथ' 138

इंतजार में चुप खड़े हैं जो 142

ओ मेरी नवेली अमेरिका : जॉन डन की विनोदपूर्ण झप्पियाँ 146

जॉन डन की कविताएँ 149

पोप का 'मूर्खिस्तान' 154

बाल मजूर और ब्लेक 157

वर्ड्सवर्थ : लंदन में गाँव 161

टिन्टर्न अभी 170

अमरता के सिलसिले 178

कीट्स की बुलबुल 198

अरोरा ली का हमजाद 201

सच का कडाइलोस्कोप 204

एक थे टी.एस. एलियट 207

ब्रिटिश उपन्यास का भारतीय पाठ 214

एक थे चार्ल्स डिकेंस 215

डेविड कॉपरफील्ड : एक वंचित बचपन का सयाना बाँकपन 228

'हाय, मैं तो साहब बन गया' -सिंड्रोम और डिकेन्स 233

अ टेल ऑफ टू सिटीज (समस्तीपुर और लंडन?) 237

'हार्ड टाइम्स' और हमारा समाज 240

ऊजाबोर्ड पर श्रीमती लॉरेन्स 244

यूलिसिस : पैर में चकरी बाँधकर 250

आमुख

पश्चिमी अनुवाद-परम्परा और एशियाई प्रयाण

शब्द ठीकरे नहीं होते कि यहाँ से उठाकर वहाँ रख दिया और निश्चिंत हो लिए। हर प्रयोक्ता उसमें अपने अर्थ-संस्कार डालता है, ओवेन बारफील्ड के शब्दों में "every individual must intuit meaning for himself, and the function of the poetic is to mediate such intuition by suitable suggestion" यही एशियाई अनुवाद परम्परा का सार है जो आज हम पश्चिमी विद्वानों के मुँह से सुन रहे हैं। वह विचार ही क्या, जो विकसित न हो, वह शब्द ही क्या जिसका अर्थागम कीलित रखा जा सके! इसीलिए 'कर्थासिस' का अनुवाद हम रस-संचार नहीं कर पाते और nagative capability का अनुवाद 'साधारणीकरण' नहीं कि शब्दों पर स्थानकालसापेक्ष अंतर्ध्वनियों के कई-कई अर्थग्राम बसे होते हैं जिन्हें विस्थापित कर कहीं और पुरस्थापित करना उतना आसान नहीं होता।

लेकिन कभी-कभी अनुवादी घालमेल दार्शनिक ढंग से उपयोगी भी हो सकते हैं जैसे- 'ईश्वर' का अनुवाद 'अल्ला' या 'रहीम' का 'राम'। इस पर हम बाद में आएँगे, पहले जरा अनुवाद का इतिहास टटोल लें।

पहले पश्चिमी इतिहास ही। एक लंबे समय तक अन्य विमर्शों की तरह अनुवाद-विमर्श पर भी पश्चिमी प्रवक्ताओं का बोलबाला रहा। पंद्रहवीं शताब्दी के आसपास बाइबिल के अनुवाद होने लगे और सोलहवीं शताब्दी के आस-पास ग्रीक और रोमन (क्लासिकल) साहित्य के अनुवाद की भी विशद परंपरा बनी। उसके बाद औपनिवेशिक विस्तार के साथ उनके 'वाइट मैन्स बर्डेन' का विस्तार हुआ। सुदूर एशिया, अफ्रीका-आस्ट्रेलिया के 'जंगलियों' के मानसिक-बौद्धिक-आत्मिक विकास का, उनके सिविलाइजिंग मिशन' का विद्रूप घटित हुआ।

रोमन और ग्रीक अनुवादों के पीछे तो आत्मसंवर्द्धन और 'कुछ अच्छा सीखने' की मनोवृत्ति काम कर रही थी। पोप-ड्रायडन आदि कवि कालातीत रचनाएँ आत्मसात करते हुए अपनी भाषा का गौरव ही बढ़ा रहे थे और आगे वाले लेखकों के सामने अच्छे लेखन का मॉडेल दे रहे थे। इसी से उन्होंने अपने काल को भी 'नियोक्लासिकल' काल कहा वहाँ भी उन्होंने 'छूटें' कम-कम लीं - 'ज्यों की त्यों धरदीनी चदरिया' - (एक अलग